International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197; Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 892-893

कुकरमुत्ता का संवेदना पक्ष एक अध्ययन

Sunila
Ph.D. Student, OPJS University, Churu, Rajasthan, India

प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी कविता में कुकरमुता सर्वाधिक विवादास्पद कविताओं में से एक है। छायावाद के उत्तरार्द्ध में 'सरोज स्मृति' तथा राम की शक्ति पूजा' कविता लिखने के बाद आधे दशक पश्चात जब निराला इस कविता को लिखा तो हिन्दी कविता जगत में कोलाहल मच गया। उच्चकोटि के कवियों ने तो यह तक कह दिया ''यह कविता नहीं साँप झाड़ने का मंत्र है।'' डॉ राम विलास शर्मा ने इस कविता की सामान्य आलोचना की और इसकी कुछ सामान्य विशेषताओं को उकेरा। दूधनाथ सिंह, नंद दुलारे वाजपेयी ने इस कविता को ''निराला जी का अगला सफल पड़ाव बताया। सही बात तो यह कि स्वयं निराला जी ने इस कविता को भाव भाषा विचार सभी दृष्टियों से सबसे सुंदर कविता बताया।''[1]

''कुकरमुता, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की एक प्रसिद्ध लम्बी कविता है जिसमें कवि ने पूंजीवाद सभ्यता पर कुकरमुता के बयान के बहाने करारा व्यंग्य किया है। कुकरमुता गुलाब को सीधा संदेश भेज कर सदेश अंदाज में सम्बोधित करता चला जाता है।''[2]

''कुकरमुता विषयवस्तु, शिल्प–संघटन, भाषिक–संरचना, व्यंग्य और हास्य इन सभी दृष्टियों से सर्वथा विद्रोही एवं महत्वपूर्ण कृति है। यह हर क्षेत्र में अभिजात्य वर्ग से मुक्ति का संदेश देता है।''[3]

कुकरमुता को संवदेना को लेकर आरम्भ में प्रगतिवादियों की राय थी कि यह प्रगतिवादी सम्पूर्ण भाव की कविता है। इसका नायक कुकरमुत्ता सर्वहारा वर्ग का प्रतीक है। यहाँ गुलाब पूंजीपती शोषक वर्ग का प्रतीक है। ''यह बात इतनी सीधी और सरल नहीं थी जितनी कह दी। इसके लिए तह तक जाना पडेगा।''[4]

कविता में कुकरमुता अपने आप में स्खलित चरित्र है। वह हीनता की ग्रंथि से भरा हुआ है। उसमें वह तेज नही जो क्रांतिकारी चरित्र को पहचान सके।

''वही गंदे में उगा देता हुआ बुता
पहाड़ी से उठे सर ऐंठकर बोला कुकरमुता।''[5]

इसी कारण वह कविता में क्रांति चेतना का वाहक बनने की जल्द ही हँसी का पात्र बन जाता है साथ कविता के दूसरे खंड में नवाब की बेटी का जिक्र आता है, यहाँ माली की बेटी है दोनो में भावात्मक गहराई है।

''एक दिन हंसकर बहार यह बोली
चलो बाग में घूम आए गोली
दोनो चली जैसे धूप और छाँह
गोली के गले पड़ी बहार की बाँह।''[6]

यहाँ प्रगतिवादी बात कही जाए तो मित्रता और भी वर्ग भेद में आश्चर्य वाली लगती है। यह प्रगतिवादी दृष्टि की मिथ्या चेतना कही जा सकती है। यह ऐसी स्थिति जहाँ प्रतीत होता है कि नवाब की बेटी और माली बेटी दोनों कल्पना लोक में विचरण कर रही है और कवाब भी खाती हैं।

''खाते ही बहार ने यह फरमाया
ऐसा खाना आज तक नहीं खाया
शौक से लेकर स्वाद
खाती रही दोनो
कुकरमुते का कलिया कवाब''[7]

यह कोई माली और नवाब की बेटियों की मित्रता का चित्रण है या प्रगतिवाद की कोई कविता, स्थिति असंमजस की है, प्रश्न बनता है कि कविता प्रगतिवाद की नहीं है तो वास्तविक उद्देश्य क्या है? वस्तुत कविता का उद्देश्य क्या है। बहुत गहराई के पश्चात समझ आता है कि कविता प्रगतिवादी जडता के सिद्धांतों का विरोध करती है, उसकी जड़ता का नहीं। निराला कुकरमुत्ते के माध्यम से प्रगतिवाद के उस जड़ के सरलीकरण पर चोट कर रहे हैं जो साधाराण को महत्व देने के प्रयास में सुंदर को गलत मान बैठता है और यह नहीं समझ पाता कि गेहूँ और गुलाब में किसी एक से नहीं जीवन दोनों से परिपूर्ण होता है। इस बात को स्वीकारते हुए रामविलास लिखते हैं, '' गुलाब को वैभव और रूपगंध का प्रतीक मानकर कुकरमुत्ता उसे गाली देने लगता है, तब वह वास्तव में कुर्तक करता है कि सफाई से गंदगी श्रेष्ठ है। कुछ प्रगतिवादी आलोचकों ने उसे सर्वहारा वर्ग का प्रतीक मानकर उसका काफी वंदन–अभिनंदन किया है। कुकरमुत्ता की तर्क योजना है कि वह वर्ग जिसकी दृष्टि परिचय देती कि समाज में प्रोलिटेरियट नहीं, लूंपन प्रोलिटेरियट वर्ग दृष्टि है, शहर के आवारा टटपूंजीयों का दृष्टिकोण जो क्रांतिकारी संगठन और संघर्ष का रास्ता छोड़कर अराजकता की नीति अपनाता है।''[8]

मैंने बदले पैंटरे
जहाँ भी शासक लड़े
पर है प्रोलिटेरियन झगड़े जहाँ
मिया बीबी के क्या कहना हैं वहाँ।''[9]

यह वर्ग भेद की नहीं समाज की बात है। हर समाज में यह सम्भव है। यहाँ कवि की जनवादी भावना के दर्शन होते है। साथ ही कवि पाश्चात्य विचारकों को उपहास उड़ाता नजर आता है क्योंकि उसमें भारतीयता की भावना झलकती है। कवि की इस बात पर विचारक रामविलास शर्मा कहते हैं कि कुकरमुत्ता ने अपना स्वरूप वैसा ही बताया है जैसा सर्वव्यापक रूप में वेदांत दर्शन के बुद्ध जैसा है।

''कहीं का रोड़, कही का पत्थर
टी.एस. इलियट ने जैसे दे मारा
पढ़ने वालो ने जिगर पर रखकर
हाथ कहाँ लिख दिया जहाँ सारा।''[10]

वस्तुत अभिजात्य से मुक्ति और साधाराण के महत्व की स्थापना के पश्चात यह कठिन था कि भद्देश को किस रूप में चित्रित किया जाए। इस कविता कवि की समग्र दृष्टि इसका में यहीं बखूबी चित्रित है। यथार्थ भद्दा होता है कवि ने यथार्थ को सहजता से चित्रित किया है–

''बाग के बहार खडे थे झोंपड़े
जो दूर से दीख रहे थे अधगड़े
जगह गंदी, रूका सड़ता पानी
कहीं मुर्गी कहीं अंडे
धूप खाते कंडे
हवा बदबू से मिली
हर तरह बसीली पड़ गई।''[11]
इस के साथ कविता का दूसरा पक्ष भी है–
''देखा फिर कुछ उड रही थी तितलियां
डालो पर कितनी चहकती थी चिड़ियाँ
भौंरे गूंजते थे मतवाले से।''[12]

वस्तुत कुकरमुत्ता कविता बहुत सुदर कविता है। यह पाठक के अन्तर मन में एक दृष्टि का निर्धारण करती है जो निश्चय ही वर्ग भेद पर आधारित है।

संदर्भ सूची

1. राऊ आई.ए.एस. –36
2. कुकरमुत्ता वीकीपीडिया–2
3. कुकरमुत्ता निराला कवर पेज से
4. वही
5. कुकरमुत्ता निराला '17
6. वही
7. वही
8. निराला, रामविलास शर्मा–73
9. कुकरमुत्ता निराला–19
10. वही
11. वही
12. वही